

रमज़ान का संदेश

पांच शीर्षकों पर आधारित

1. रमज़ान की दस नितियां
2. रमज़ान की तीस विशेषताएं
3. रमज़ाम में प्रचुरता से कुर्आन पढ़ने पर प्रोत्साहन
4. शब-ए-क़द्र की दस विशेषताएं
5. ईदुल फ़ित्र का उपदेश-ईदुल फ़ित्र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुएं

लेखक:

शैख़ माजिद बिन सुलैमान अरसी

मोहर्रम - १४४४ हिजरी

रमज़ान की दस नितियां

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रषंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविशकारित बिदअत; नवाचारद्ध है और प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

● अल्लाह तअ़ाला ने अपनी हिकमत; नीतिद्ध से बंदों के लिए रमज़ान को मषरू ; अनिवार्यद्ध किया है, जिसमें फजर के समय से लेकर सूर्य अस्त होने तक मनुश्य भोजन.जल और संभोग से रुका रहता है।

1. अल्लाह तअ़ाला ने बड़े दूरदृष्टिता से रोज़े को फरज़ किया;¹द्धउनमें सबसे बड़ी हिकमत; नीतिद्ध तक्वा ;धर्मनिश्ठाद्ध की प्राप्ति है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾

अर्थात:ऐ ईमान वालो!तुम पर रोज़े रखना फरज़; अनिवार्य द्धकिया गया है,जिस प्रकार तुमसे पूर्व के लोगों पर फरज़; अनिवार्यद्ध किये गये थे,ताकि तुम तक्वा;इष्वर भक्तिद्ध अपनाओ।

आयत से ज्ञात हुआ कि रोज़े के अनिवार्य होने की हिकमत;नीतिद्धयह है कि तक्वा;धर्मनिश्ठाद्ध अपनाया जाए,तक्वा;पुण्यशीलताद्ध यह है कि बंदा अपने और अल्लाह की यातना के मध्य बचाव की दीवार बनाए,वह

¹ यह अध्याय अलइस्लाम,सवाल व जवाब वेबसाइट और षैख मोहम्मद बिन सालेह बिन ओसैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक“मजालिसो षहरे रमज़ान“के बाबुल मज्लिस अलतासे से संक्षेप एवं हेरफेर के साथ लिया गया है।

इस प्रकार कि अल्लाह के आदेशों को पूरा करे और अल्लाह ने जिन चीजों से रोका है उससे रुक जाए। जिसके नरिणामस्वरूप वह अपने आत्मा को स्वैद अल्लाह तआला को याद रखने का आदी बन जाता है,अतः उपवास रखने वाला शक्ति के बावजूद इत्मइच्छा को छोड़देता है,केवल इस ज्ञान के आधार पर कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है।

2.रोज़ा की एक हिकमत;नीति यह है कि वह नेमतों ;आषार्वदों के आभारी होने का माध्यम है,क्योंकि रोज़ा नाम है खान,पीने और संभोग से अपने आपको बचाने का,जो कि बहुत बड़ी नेमत;इष्वरकृपाद्ध है,किंतू रोज़े की स्थिति में इनसे रुके रहने से मनुश्य को उनकी महत्ता का एहसास होता है,जब मनुश्य इन नेमतों;प्रदानोंद्ध से वंचित होता है तो उनका महत्व समझ में आता है,इस प्रकार रोज़े की स्थिति में इनसे दूर रहना उन नेमतों;आषीर्वादों द्धपर अल्लाह का आभार **वयक्त** करने पर उकसाता है।

3.रोज़े की एक हिकमत;नीति यह है कि वह अल्लाह की हराम;निशिद्ध की हुई चीजों को छोड़ने का माध्यम है,क्योंकि रोज़ा व्यक्तिगत इच्छाओं को मात देने और एकता की कठोरता और अहंकार से नफस;आत्माद्ध को दूर रखने का कारण है,जिससे मनुश्य के अंदर सत्य को स्वोकारने और लोगों के साथ विनीत भाव सेसुंदर व्यवहार करने का गुण जन्म लेता है,जबकि हमेषा पेट भरा रखने और महिलाओं से संभोग करने से अहंकार और नेमत;प्रदानद्ध की नाषुकरी का तत्व जन्म लेता है।

4.रोज़ा की एक हिकमत;नीति यह भी है कि वह काम.वासना पर प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करता है,क्योंकि नफस;आत्माद्धजब पेट भरे स्थिति में हो तो उसमें काम.वासना **उत्पन्न** होता है,और जब वह भूका हो तो

काम.वासना से दूर रहता है,इसी लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:षे युवाओं का समूह! तुम में से जो भी विवाह की **शक्ति** रखता हो तो उसे निकाह करलेना चाहिए और जो निकाह की **शक्ति** न रखता हो वह रोज़े रखले क्योंकि इनसे नफसानी;आंतरिकद्ध इच्छाएं टूट जाती हैं²

5.रोज़े की एक हिकमत;नीति द्यह भी है कि वह मिसकीनों /गरीबों के लिए अनूराग एवं कृपा का स्रोत है,क्योंकि रोज़ा रखने वाला जब कुछ समय के लिए भूख का कष्ट महसूस करता है तो उसके अंदर उन फकीरों और गरीबों की याद ताजा हो जाती है जो हर समय भूखे प्यासे होते हैं,जिसके **फलस्वरूप** उसक अंदर फकीर व गरीब के प्रति कृपा व नर्मी पैदा होती है,उसके साथ सुंदर व्यवहार करने और उनको दान करने का भाव जन्म लेता है,इस प्रकार रोज़ा गरीबों के लिए अनूराग व कृपा और समाज में आपसी प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बन जाता है।

6.रोज़े की एक हिकमत ;नीतिद्ध यह है कि उससे षैतान पराजित व निर्बल होता है,मनुश्य के प्रति उसका वसवसा निर्बल होजाता है,इस प्रकार मनुश्य बुरे कार्यों को करना कम करदेता है,क्योंकि षैतान मनु के संतानों की रगों में **रक्त** के जैसा दौड़ता है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी सूचना दी है³ रोज़े से षैतान का मार्ग तंग होजाता है जिससे वह निर्बल होजाता है और उसका प्रभुत्व कम होजाता है,अतः **हृदय** में अच्छाई व पुण्य के कार्य करने और पापों से दूर रहने का तत्व उमंडने लगता है।

² इसे बोखारी:5065 ने **इब्नेमसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

³ इसे बोखारी:2039 और मुस्लिम:2175 ने सफिया रजीअल्लाहुअंहा से वर्णित किया है।

७-रोज़े की एकहिकमत ;नीतिद्ध यह है कि वह मोमिन;विष्वासीद्ध को अधिक से अधिक आज्ञा के कार्यों की आदत डाल देता है,इसलिए कि अधिकतर रोज़े की स्थिति में मनुश्य अधिक से अधिक आज्ञा के कार्य करता है,जैसे अल्लाह का ज़िक्र और कुरान की तेलावत,इसके **फलस्वरूप** वह अन्य दिनों में भी इन इबादतों; पाथनाओं द्धको करने का आदी हो जाता है।

८.रोज़े की एक हिकमत;नीतिद्ध यह भी है कि इसके माध्यम से दुनिया और उसकी इच्छाओं से रूची समाप्त हो जाती है और अल्लाह तआला के पास जो पुण्य का परिणाम है उसके प्रति रूची **उत्पन्न** होता है।

९.रोज़ा की एक नीति यह भी है कि इसके माध्यम से समस्त संसार में अल्लाह की पूजा का प्रदर्शन होता है,आप देखते हैं कि समस्त संसार के समस्त मुसलमान इस महीने में **सामूहिक रूप से** रोज़े रखते हैं,यहां तक कि वे लोग भी रोज़े रखते है जो समान्य दिनों में इस्लाम विरोधी कार्य करते हैं,जब रमज़ान आता है तो वे भी अपने मुसलमान भाइयों के साथ रोज़े रखते कोई उनमें बेरोज़ा नहीं रहता,यहां तक कि बेराजा पापी.अल्लाह की पनाह.भी खुलेआम खाने पीने की हिम्मत नहीं करता,बल्कि काफिर भी मुसलमानों क सामने खाने पीने से बचता ह,निसंदेह यह एक महत्वपुर्ण प्राथना बल्कि इस्लाम के एक स्तंभ का व्यावहारिक प्रदर्शन है।

१०.रोज़ा की एक हिकमत;नीतिद्ध यह भी है कि इसके माध्यम से मानवीय षरीर को अनेक चिकित्सा लाभ प्राप्त होते हैं,रोज़ा **हृदय** के धड़कन को सही करता है,पाचन तंत्र को राहत का अवसर देता है,**रक्त** को हानीकारक चरबी,कोलसर्टोल और **खट्टे** डकार से साफ करता है,पेट

को आराम पहुंचाता है,मनुश्य को मोटापे से बचाता है,षरीर में जो जहरीली सामग्री जमा हो जाते हैं,उनको बाहर करने में सहायता करता है,रक्तचाप और षुगर;नहंतद्धका संतुलन बनाए रखता है ।

- यह वे दस हिकमते;नीतियांद्व हैं जो रोजे के फरज;अनीवार्यद्ध होने में छूपी हुई है ।
- अल्लाह तअ़ाला से प्रार्थना है कि हमें रमज़ान के रोजे उसी प्रकार रखने की तौफीक दे जिस प्रकार उसे पसंद है,अपने ज़िक्र और आभार और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए ।

रमज़ानकेमहीनेकी२०विशेषताएँ!

अल्लाहतआलाजोचाहताहैअपनीइच्छासेअविष्कारकरताहैजैसाउस उच्चएवंसर्वश्रेष्ठकीबुद्धिमत्ताकोआवश्यकताहोतीहै.

इसीकारणवशउसनेकुछदेवदूतोंकोकुछदेवदूतोंपरवरियतादी,

कुछपुस्तकोंकोकुछपुस्तकोंपरअग्रमानतादी,

कुछदूतोंकोकुछदूतोंपरप्रधानतादी,

कुछस्थानोंकोदूसरेस्थानोंएवंसमयपरवरीयतादी,

इसीप्रकाररमज़ानकेमहीनेकोभीअन्यमहीनोंपरअग्रमान्यतादी.

यहदासोंकेहितमेंअल्लाहकीकृपाहैकिउसनेउनकेलिएपुण्यएवंलाभ

केअवसरप्रदानकिएजिनमेंसत्यकर्मोंकेलाभकईगुनाबढ़ादिएजातेहैं,

पापोंकोमिटादियाजाताहैएवंस्वर्गमेंस्थानउच्चकिएजातेहैं.

जान लें कि अल्लाह तआला अपनी निती से जो चाहाता है

पैदा करता है और जिसे चाहता है उसका चयन करता है,अतः

कुछ फरिश्तों को कुछ पर फज़ीलत (प्रधानता) दी है,कुछ

पुस्तकों को कुछ पर विशिष्टता प्रदान की है,कुछ पैगंबरों को

कुछ पर वरिष्ठता प्रदान किया है,कुछ समयों एवं स्थानों को

कुछ पर वरिष्ठता प्रदान की है,इसका एक उदाहरण यह है कि

अल्लाह ने रमज़ान के महीने को अन्य समस्त महीनों पर

प्रधानता दी है, यह बंदों पर अल्लाह के विशेष रहमत (कृपा) का दृश्य है कि उसने उनके लिए पुण्य एवं भलाई के अवसर प्रदान किये, जिनमें पुण्यों का बदला बढ़ जाता है, पाप मिटाए जाते हैं और स्वर्ग में मोमिनों के स्थान उच्च किये जाते हैं।

• जब यह सिद्ध हो गया तब यह भी ज्ञात रखें -
अल्लाह आप पर अपनी कृपा की बरखा बरसाए- किरमज़ान के व्रत की तीस विशेषताएं हैं, उन में से कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

१- व्रत इस्लाम का चौथा स्तंभ है,
अब्दुल्लाह बिना उमर रज़ि अल्लाहू अन्हूमा का वर्णन है:
मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना:
इस्लाम ५ स्तंभों पर आधारित है,
यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं,
एवं नमाज़ पढ़ना, दान-पुण्य देना, हज्ज करना एवं
रमज़ान के व्रत रखना.⁴

⁴इसे बज़ार: ०८ एवं मुस्लिम: १६ ने प्रतिलिपि की एवं उल्लेख कि एगएशब्द मुस्लिम के हैं

२- व्रतकी एक विशेषता यह भी है कि यह इस्लाम से पूर्व धर्मों में भी प्रचलित था जो इसके सरफेस होने का प्रमाण है अल्लाह का कथन है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَيْنَا الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ. (البقرة: ۱۸۳)

अर्थात: " एविश्वासयो!

तुम पर व्रत रखना अनिवार्य किया गया जिस प्रकार तुम से भूत पूर्व मनुष्यों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम भय को अपनाओ."

३- व्रतकी एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह ने इसका संबंध अपनी ओर किया है जो कि संपूर्ण उपासनाओं में इसकी अलग पहचान एवं सर्वश्रेष्ठ होने को प्रमाणित करता है.

अबू हुरैरारज़ि अल्लाहू अन्हूरि वायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का कथन है:

"आदम की संतान का व्रत के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य उसका है यह मेरा है एवं मैं स्वयं उसका बदला दूंगा..."

अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला का संपूर्ण इबादतों के अतिरिक्त व्रत को विशेष रूप से अपनी ओर संबंधित करना इस बात पर साक्ष्य है कि अल्लाह तआला के निकट यह माननीय एवं प्रिय उपासना है.

इसका कारण यह है कि इस इबादत के भीतर अल्लाह के हित में दांसों का भा

वखुलेरूपमें शुद्ध हुआ करता है क्योंकि व्रतदांसों एवं पालनहार के बीच एक गुप्त वस्तु है जिससे अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी अवगत नहीं हो सकता.

व्रत रखने वाला एकांत में उन वस्तुओं के प्रयोग करने की क्षमता रखता है जिन्हें अल्लाह तआलाने अवैध कर दिया है, परंतु वह उसका प्रयोग नहीं करता है क्योंकि उसे ज्ञात है कि उसका एकरब है जो अकेले में भी उसे देख रहा है और उसने उन वस्तुओं को उस पर अवैध कर दिया है,

इसलिए वह अल्लाह की यातना से भयकरते हुए उन वस्तुओं को त्याग देता है.

यही वह मूल कारण है कि अल्लाह ने अपने दासों के इस शुद्धता की प्रशंसा की है और संपूर्ण उपासनाओं को छोड़कर व्रत को विशेष रूप से अपने लिए चुन लिया है.

४-

रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआलाने इसके संबंध

में कहा है:

"मैं स्वयं इसका परीणाम दूंगा."

इस कारण वश अपनी ओर बदले को संबंधित किया है क्योंकि पूण्य-कार्यों बदलागणना के साथ बढ़ा-चढ़ाकर प्रदान किया जाता है.

प्रत्येकपुण्यकालाभ१०गुनासेलेकर७००गुनाएवंउससेअधिकदियाजा
ताहै.

परंतुव्रतकेसवाबकोअल्लाहतआलानेबिनाकिसीगणनाकेअपनीऔर
संबंधितकियाहैजोइसबातकासाक्ष्यहैकिइसकासवाबअधिकबड़ाहै.

वहस्वच्छएवंविशालअल्लाहसंपूर्णदयालुसेबड़ादयालुएवंसारेकृपालु
ओंसेबड़ाकृपालुहै.

दयादयालुकेस्तरकेअनुसारमिलतीहैइसकारणवशव्रतरखनेवालेका
सवाबअताहएवंअनगिनतहै.

५- व्रतकीएकविशेषतायहहैइसमेंधीरजकेतीनोंभागइकट्ठा
होजातेहैं: अल्लाहकीआज्ञाकारीतापरधीरज,

अल्लाहनेजिनचीज़ोंकोअवैधकरदियाहैउनसेदूरीबनाएरखनेपरधीर
ज,

एवंअल्लाहनेहमारेभाग्यमेंजोकठिनपरिस्थितियांलिखदिएहैंउनपर
धीरज.

जैसेभूखप्यासगंभीरतातनएवंप्राणकीदुर्बलताइसप्रकारव्रतरखनेवा
लोंकीगणनाउनकृपाणोंमेंहोताहैजिनकेसंबंधमेंअल्लाहकाकथनहै:

إِنَّمَا يُوقَفُ الصَّابِرُونَ وَأَجْرُهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ □ . (الزمر: ١٠) ⁵

अर्थात: "कृपाणोंकोपूर्णरूपसेअनगिनतसवाबदियाजाएगा."

६-

व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहतआलानेउपवासकरनेवालों
केलिएस्वर्गमेंएकऐसाद्वारतैयारकररखाहैजिससेउनकेअतिरिक्त
कोईऔरप्रवेशनहींकरेगा,

सहलबिनसअदरज़िअल्लाहूअन्हूरिवायतकरतेहैंकिरसूलसल्लल्ला
हुअलैहिवसल्लमकाकथनहै:

"स्वर्गकाएकद्वारहैजिसेरैय्यानकहतेहैं,

प्रलयकेदिनइसद्वारसेकेवलउपवासकरनेवालेहीप्रवेशकरेंगे,उनके
अतिरिक्तऔरकोईउससेप्रवेशनहींकरेगा.

पुकाराजाएगाकिउपवासकरनेवालेकहांहैं?

वेखड़ेहोजाएंगेउनकेअतिरिक्तऔरकोईनहींभीतरप्रवेशकरपाएगाऔ

रजबयहलोगभीतरप्रवेशकरजाएंगेतोयहद्वारबंदकरदियाजाएगाफिरउससेकोईअंदरप्रवेशनहींकरसकेगा।"⁶

७-व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिवहनरकसेसुरक्षादेनेवालाढालहै, उस्मानबिनअबुलआसरज़िअल्लाहूअन्हूरिवायतकरतेहैंकिमैंनेरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकोफ़रमातेहुएसुना:
"उपवासनरकसेसुरक्षादेनेवालीढालहै,
जिसप्रकारतुममेंसेकोईयुद्धकेमैदानमेंढालसेअपनीसुरक्षाकरताहै।"

7

८- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान एवं इहतिसाब के साथ रमज़ान के महीने के रोजे रखता है उसके पूर्व के सारे पापक्षमाहोतेहैं,अबूहौरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जो व्यक्ति ईमान रखते हुए पुण्य की नीयत से

⁶इसेबुखारी:१८९६एवंमुस्लिम:११५२नेरिवायतकियाहैएवंउल्लेखकिएगएशब्दबुखारीकेहैं.

रमज़ान के रोजे रखे उसके समस्त पिछले पाप क्षमा हो जाते हैं।⁸

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम मिंबर पर चढ़े और फरमाया:आमीन,आमीन,आमीन।

आप से पूछा गया कि:हे अल्लाह के रसूल!आप मिंबर पर चढ़े तो आप ने तीन बार (आमीन) कहा।

आप ने फरमाया:जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और फरमाया: (जिस व्यक्ति को रमज़ान का महीना मिला और उस को क्षमा न मिल सका,वह नरक में प्रवेश करेऔर अल्लाह उसे (अपने कृपा से) दूर करदे,आप आमीन कहिये,तो मैं ने कहा:आमीन।⁹

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे:पांच समय की नमाज़ें,एक

⁸ इसे बोखारी (३८) और मुस्लिम (७६०) ने रिवायत किया है।

⁹ इस हदीस को अहमद (२/२४६-२५४) इब्ने खोजैमा (३/१९२) ने वर्णित किया है,इस का मूल्य मुस्लिम में (२५५१) में है,अल्बानी ने صحيح الترغيب والترهيب (९९७) में कहा है कि:यह हदीस हसन सहीह है।

जुमा से दूसरा जूमा और एक रमज़ान से दूसरा रमज़ान, उनके मध्य होने वाले पापों के लिए कफ़ारा (प्रायश्चित) हैं, शर्त यह है कि बड़े पापों से बचा जाए।¹⁰

९-रमज़ानकेमहीनोंकेव्रतकीएकविशेषतायहहैकिमुसलमानोंपरयह उपवाससरलकरदिएगएहैं,
वहइसप्रकारकीउपवासकरनेवालाजबइससेअवगतहोजाताहैकिआसपासकेसंपूर्णमनुष्यउपवासकिएहुएहैंतोयहलगताहैकिउसकेलिएव्रतरखनाआसानहैऔरउसकेभीतरउपासनाकीसंदर्भमेंचपलताउत्पन्नहोतीहै.

१०-व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहतआलानेउपवासकरनेकोप्रार्थनाकेस्वीकारकरनेकाएकविशेषकारणघोषितकियाहै,
इसकासाक्ष्यनबीसल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमकायहकथनहै: "तीनप्रकारकीप्रार्थनाएंआवश्यकरूपसेस्वीकारकीजातीहैं: पिताकीप्रार्थना, उपवासकरनेवालोंकीप्रार्थना, यात्रीकीप्रार्थना." ¹¹

¹⁰ सहीह मुस्लिम: २३३

¹¹ इसेबैहकी:

३/३५४नेअनसबिनमालिकसेरिवायतकियाहै, एवंअल-बानीनेअल-

सहीहा: १७९७मेंइसकाउल्लेखकियाहै.

इसके अतिरिक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "

अल्लाह तालातीन प्रकार के मनुष्य की प्रार्थना वापस नहीं लौटाता: न्याय करने वाले शासक, उपवास करने वाले यहां तक की वह उपवास तोड़ लें, एवं उत्पीड़ित व्यक्ति."¹²

११-रमजान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमजान के महीने में रात्रि में जाग कर उपासना (तरावीह की नमाज़) करता है उसके पीछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं. अबू हुरैरारज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "

जिसने ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमजान के महीने में कया मुल-लेल की, अर्थात् तरावीह की नमाज़ पढ़ी; उसके पीछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं."¹³

¹²

इसे अहमद: ९७४३ आदिने रिवायत किया है एवं अल-मुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा है कि यह हदीस अधिकतम मार्ग एवं गवाहों के आधार पर सही है.

¹³ इसे बुखारी: ३७ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है.

इसके अतिरिक्त आपसल्लल्लाहु अलैहिवसल्लमका कथन है: " जो व्यक्ति ईमान के साथ क़्याम करे यहां तक कि वह समापन कर ले तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति के लिए पूरी रात्रि क़्याम करने का सवाब सुनिश्चित करेगा."¹⁴

१२-

रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान का व्रत रखता है उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाते हैं,

अबू हुरैरारज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि रसूलसल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया:

"जो रमज़ान के व्रत ईमान की साथ सवाब की आशा करते हुए खे उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाएंगे."¹⁵

अबू हुरैरारज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि नबीसल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम मंच पर पधारे और तीन बार आमीन कहा!

¹⁴ इसे अबू दाऊद आदिने अबू ज़ररज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है एवं शैख़ शुएबर हिमहुल्लाह ने इसे सही हक हा है

¹⁵ इसे बुखारी: ६८ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है.

आपसे प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया: "

जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए, और फ़रमाया:

जिसने रमज़ान के महीने को पाया एवं उसकी क्षमानहीं हो सकी और वह न
रकमें प्रवेश कर गया अल्लाह उससे अपनी दया से वंचित कर दे! -

आप आमीन कहिए- तो मैंने आमीन कहा."¹⁶

अबुहुरैरार जिअल्लाहूअन्हूफ़रमाते हैं:

रसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमफ़रमाया करते थे: "

जब मनुष्य बड़े पापों से वंचित रहा हो ०५ नमाज़ें,

एक जुमाद्वितीय जुमा तक,

एकरमज़ानद्वितीयरमज़ानतकबीचकेसमयमेंहोनेवालेपापोंकोमि
टानेकाकारणहै."¹⁷

१३-रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसमहीनेमेंदान-

पुण्यकरनामुस्तहबहै,इब्नेअब्बासरजिअल्लाहूअन्हूमासेमरवीहैकि

¹⁶ इसेअहमद: २/२४६-२५४, एवंइब्ने-ए-खुज़ैमा: ३/१२९नेरिवायतकियाहै, इसकामूलसहीहमुस्लिम,
हदीससंख्या: २५५१केअंतर्गतआईहै, अल-बानीनेसहीह-
उत्तरगीबिवत्तरहीब: ९७७मेंकहांहैकियहहदीसहसनसहीहहै.

¹⁷ इसेमुस्लिम: २३३नेरिवायतकियाहै.

"नबीसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमभलाईकरनेमेंसर्वश्रेष्ठउदारथेऔर
रमजानमेंआपकीउदारताकीतोकोईसीमाहीनहींथी."¹⁸

१४-रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसकेउमरेकापुण्यकईगुना
बढ़ादियाजाताहै.

इब्नेअब्बासरज़िअल्लाहुअन्हूमाफरमातेहैंकिरसूलसल्लल्लाहुअलै
हिवसल्लमनेएकअंसारीमहिलासेकहा:

"जबरमज़ानआएतोउसमेंउमराकरलो, क्योंकि
(रमज़ानकेमहीनेमेंएकउमराहज्जकेसमानहोताहै)."¹⁹

१५-

रमज़ानकेमहीनेकीएकविशेषतायहभीहैकिरमजानकीप्रत्येकरात्रि
मेंअल्लाहतालाअपनेकुछदासोंकोनरकसेस्वतंत्रताकाप्रमाणदेताहै,
अबूहुरैरारज़िअल्लाहुअन्हूफ़रमातेहैंकेरसूलसल्लल्लाहोअलेहीवसल्
लमकाकथनहै: "

जबमेंरमज़ानकीप्रथमरात्रिआतीहैतोदुष्टदेवोंएवंविद्रोहजिनोंकोजक
इदियाजाताहै, नरककेद्वारबंदकरदिएजातेहैं,

¹⁸ इसेबुखारी: ०६एवंमुस्लिम: २३०८नेरिवायतकियाहै.

¹⁹ इसेबुखारी: १७८२एवंमुस्लिम: १२५६नेरिवायतकियाहै.

उनमेंसेकोईभीद्वारखोलानहींजाता.

एवंस्वर्गकेद्वारखोलदिएजातेहैं,

उनमेंसेकोईभीद्वारबंदनहींकियाजाता. पुकारनेवालापुकारताहै:

भलाईकेचाहनेवाले! आगेबढ़, एवंपापोंकेचाहनेवाले! रुकजा.

औरअग्निसेअल्लाहकेबहुतसेस्वतंत्रकिएगएदासहैं.

(होसकताहैतूभीउन्हींमेंसेहो!)

औरऐसारमज़ानकीप्रत्येकरात्रिकोहोताहै."²⁰

जाबिररज़िअल्लाहूअन्हूफ़रमातेहैंकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्ल

मनेफ़रमायाअल्लाहतआलाप्रत्येकउपवासकेतोड़तेसमयकुछलोगों

कोनरकसेस्वतंत्रकरताहै, औरयह (रमज़ानकी)

प्रत्येकरात्रिकोहोताहै."²¹

१६-१७-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसमहीनेमेंस्वर्गकेद्वारखोल

²⁰ इसेतिर्मीज़ी:६८२, एवंइब्न-ए-माजा: १६४२नेरिवायतकियाहै, एवंशैखअल-बानीरहिमहुल्लाहनेसहीह-हुल-जामे: ७५९मेंइसेहसनकहाहै.

²¹ इसेअहमद:२२२०२, एवंइब्नेमाजा:१६४३नेरिवायतकियाहै, एवंउल्लेखकिएगएशब्दइब्न-ए-माजाकेहैं, इसकेअतिरिक्तशैखअल-बानीनेसहीहइब्न-ए-माजामेंइसेसहीहकहाहै.

दिए जाते हैं नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्ट देवों को हथकड़ियों से जकड़ दिया जाता है.

अबू हुरैरारज़ि अल्लाहू अन्हो से मरवी है किर सू लस लल ल्लाहू अलै हिवस ललमने फ़रमाया:

"जबरम ज़ान के महीने का आगमन होता है तो स्वर्ग के संपूर्ण द्वार खोल द िए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्ट देवों को जंजीरों से ज कड़ दिया जाता है." ²²

18 -रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह है कि इस में शैतानों को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है, इसका प्रमाण उपरोक्त दोनों हदीसों हैं, शैतानों को जकड़ने का मतलब यह है कि जंजीर में उन्हें जकड़ देना, वह इस प्रकार से कि रमज़ान के अलावा दिनों में जिन स्थानों तक उनकी पहुंच थी, वहां तक रमज़ान में न जा सकें, बल्कि उनकी दुष्टता सीमित हो जाए, एक कथन यह भी है कि केवल दुष्ट शैतानों को ही जकड़ा जाता है।

²² इसे बुखारी: १८९९, एवं मुस्लिम: १०७९ ने रिवायत किया है.

१९-

रमज़ानकेमहीनेकीएकविशेषतायहहैकिइसमेंप्रचुरताकेसाथकुरआ
न कासस्वरपाठकरनामुस्तहबहै, सलफ़-ए-
सालेहीनरिज़वानुल्लाहअलैहिमअजमईनकीआदतथीकिवेनबीसल्
लल्लाहूअलैहिवसल्लमकेमार्गकापालनकरतेहुएरमज़ानमेंपूराकुर
आनकासस्वरपाठपूरीव्यवस्थाकेसाथकियाकरतेथे,
क्योंकिजिब्रीलअलैहिस्सलामप्रत्येकवर्षरमज़ानकेमहीनेमेंरसूलस
ल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमकेसाथकुरआनसुनते-सुनातेथे.

२०-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकीउपवासप्रलयकेदिनदासोंकेहित
मेंसंस्तुतिकरेगाकिउन्हेंउच्चस्थानप्रदानकिएजाएंएवंपापक्षमाकरद
िएजाएं,

अब्दुल्लाहबिनअमरज़िअल्लाहूअन्हूमासेमरवीहैकिरसूलसल्लल्ला
हुअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया:

उपवासएवंकुरआनप्रलयकेदिनदासकेहितमेंसंस्तुतिकरेंगे,

उपवासकहेगा: (हेपालनहार! मैंनेइसेखानपानएवंहवससेदूररखा,
मेरीसंस्तुतिइसकेहितमेंस्वीकारकरले.) कुरआनकहेगा: (

हेपालनहार! मैंनेइसेरात्रिकेसमयविश्रामलेनेसेदूररखा,

मेरी संस्तुति इसके हित में स्वीकार कर ले.)

इस कारण दोनों की संस्तुति स्वीकार कर ली जाएगी.²³

२१-

रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि उपवास करने वालों के मुंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी के सुगंध से भी अधिक प्रिय है, अबू हुरैरारज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्राण है,

उपवास करने वालों के मुंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी के सुगंध से अधिक अच्छा है.²⁴

२२-

उपवास की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआला उपवास करने वालों को दो प्रसन्नताएं प्रदान करता है.

एक प्रसन्नता जब वह उपवास तोड़ता है एवं दूसरी प्रसन्नता जब वह अपने

²³ इसे अहमद: २/१४७ ने रिवायत किया है, एवं अल-बानीर हिमहुल्लाह ने सहीहु-तरगीबि: ९८४ एवं सहीहुल-जामे: ७३२९ में रिवायत किया है.

²⁴ बुखारी: १९०४, मुस्लिम: ११५१

रबसे भेंट करेगा,

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसे मरवीहै किरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्

लमने फ़रमाया: उपवास करने वालोंको दो प्रसन्नताएं प्राप्त होंगी,

(एक तो) जब वह उपवास तोड़ता है तो प्रसन्न होता है,

एवं दूसरी जब वह अपने रबसे भेंट करेगा तो अपने उपवास का सवाब प्राप्त

करके प्रसन्न होगा.²⁵

२३-

रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि इसी में कुरआन का अवता

रहुआ, अल्लाह का कथन है:

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ. (البقرة: ۱۸۵)

अर्थात:

"रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन को अवतरित किया गया."

रमज़ान में भी शुभरात्रि में कुरआन अवतरित हुआ, अल्लाह का कथन है:

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ. (القدر: ۱)

अर्थात: " हमने इसे शुभरात्रि में अवतरित किया."

²⁵ बुखारी: १९०४, मुस्लिम: ११५१

यह एक महत्वपूर्ण रात है, इस में कुरान लौह-ए-महफूज से बैतुल इज्जत की ओर उतारा गया जो आकाशीय संसार में है, इसके पश्चात परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार थोड़ा-थोड़ा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होता रहा।

• इसेशुभरात्रिइसलिएकहाजाताहैकिवहबहुतहीसर्वश्रेष्ठस्थानवाली रात्रिहैजैसाकिकहाजाताहै: (अमुकव्यक्तिबड़ाउच्चस्थानवालाहै.) इसीप्रकारशुभकीओररात्रिकासंबंधकिसीवस्तुकोउसकीगुणवत्ताकी ओरसंबंधितकरनेजैसाहैइसलिएइसकाअर्थयहहोगाकिसर्वश्रेष्ठ, उच्चस्थानवालीरात्रि.

एककथनकेअनुसारइसेशिवकीरात्रिइसकारणवशकहाजाताहैकिइस मेंपूर्णवर्षकान्यायकियाजाताहै, जैसाकिअल्लाहकाकथनहै:

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ. (الدخان: ٥٤)

अर्थात:

"

इसीरात्रिमेंप्रत्येकशक्तिशालीकार्यकान्यायकियाजाताहै."

इब्न-ए-कैय्तिमरहिमहुल्लाहकहतेहैं: " यहीकथनसत्यहै."²⁶ ²⁷

²⁶ शिफ़ा-उल-अलील: १/१४०, प्रकाशित: मकतबतुल-बीकान, रियाज़

²⁷ इनकथाओंकेदेखनेहेतुदेखें: अहादीसुस्-सियाम:१४०, लेखकशैखअब्दुल्लाहफ़ौज़ान.

- अल्लाहतआलानेशुभरात्रिकोलाभदायकरात्रिसेवर्णितकियाहै, जैसाकिअल्लाहतआलानेकुरआनकेअवतरितहोनेकेसंदर्भमेंकहा:

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فَيَلْتَمِئَةً □ مُبْرَكَةً. (الدخان: ٠٣)

अर्थात: "हमनेइसकोलाभदायकरात्रिमेंअवतरितकिया."

- शुभरात्रिकीएकविशेषतायहहैकिइसमेंदेवदूतोंकाअवतारहोताहै, जैसाकिअल्लाहतआलाकाकथनहै:

تَنْزِيلًا لِّلْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ فِيهَا. (القدر: ٠٤)

अर्थात: " इसमेंरूहुल-अमीनएवंदेवदूतअवतरितहोतेहैं."

इसश्लोकमेंअल-रूहकाअर्थजिब्रीलहै,इब्न-ए कसीर

रहिमहुल्लाहइसश्लोककाउल्लेखकरतेहुएलिखतेहैं: अर्थात:

इसरात्रिप्रचुरताकेसाथबरकतकाअवतारहोताहै,

इसकारणवशदेवदूतभीभारीसंख्यामेंअवतरितहोतेहैं,

बरकतएवंरहमतकेसाथदेवदूतोंकाभीअवतारहोताहै.

इसकेअतिरिक्तयहदेवदूतकुरआनकेसस्वरपाठकरतेसमयभीअवत

रितहोतेहैंएकदमिकपरिषदोंकोअपनेअंतर्गतलेलेतेहैं,

सत्यताकेसाथशिक्षाप्राप्तकरनेवालेकेसम्मानमेंउनकेलिएअपनेपरां

कोबिछादेतेहैं."

इब्न-ए-कसीररहिमहुल्लाहकाकथनसमाप्तहुआ.

२४- रमजान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति शुभरात्रि में ईमान व इहतिसाब के बदले के साथ कयाम करे उसके पूर्व के समत्स पाप क्षमा कद दिये जाते हैं,अर्थात:जो व्यक्ति शुभरात्रि को प्रार्थना से बसाए रखे,अल्लाहनेइसरात्रिउपासनाकरनेवालोंकेलिएजोलाभएवंसवाबतैयारकररखाहै (उसपरविश्वासकरतेहुए) एवंलाभ-सवाबकीआशाकरतेहुए;
उसकेपूर्वमेंकिएगएसंपूर्णपापक्षमाकरदिएजातेहैं.
अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्होसेमरभीहैकिनबीसल्लल्लाहुअलैहिवसल् लमकाकथनहै: " जोव्यक्तिरमजानकेव्रत; विश्वासएवंलाभ-सवाबकीआशाकरतेहुएरखेउसकेपूर्वमेंकिएगएसंपूर्णपापक्षमाहोजातेहैं.²⁸

²⁸ इसेबुखारी:१९०१, एवंमुस्लिम:७५९नेरिवायतकियाहै.

२५-रमज़ान की एक विशेषता यह है कि शुभरात्रि में नमाज़ पढ़ते रहना हज़ार महीनों की प्रार्थना से अच्छा है,अर्थात ८३ वर्ष से भी अधिक,अल्लाह तआला का फरमान है:

أَيُّهُمُ الْقَدْرُ خَيْرٌ □ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ □ . (القدر: ०३)

अर्थात: "शुभरात्रि १००० महीनों से अधिक अच्छी है."

• इसके अतिरिक्त आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:
रमज़ान का लाभदायक महीना तुम्हारे निकट आ चुका है,
अल्लाह ने तुम पर इसके व्रत अनिवार्य कर दिए हैं,
इसमें आकाश के द्वार खोल दिए जाते हैं,
नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं,
विद्रोही दुष्ट देवों को हथकड़ियां पहना दी जाती हैं एवं इसमें अल्लाह तआ
ला के लिए एक रात्रि ऐसी है जो हज़ार महीनों से अधिक अच्छी है. जो इसके
लाभ से वंचित रहा वह बस वंचित ही रहा."²⁹

• इब्ने सादी रहिमहुल्लाह का कथन है: इस बात से हमारी बुद्धि आश्चर्यचकित हैं कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस में किया जाने वाला अमल

हजार महिनों के अमल से भी बेहतर है जो कि एक बड़ी लंबी आयु पाने वाले व्यक्ति के जीवन के बराबर है अर्थात अस्सी वर्ष से भी अधिक।

थोड़े हेर-फेर के साथ आपका कथन समाप्त हुआ।

२६-

रमज़ानकी एक विशेषता यह भी है कि इसके अंतिम चरण में एतेकाफ़ करना

मुस्तहब है, एतेकाफ़ का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञाकारीता एवं उपासना के हेतु मस्जिद से चिपक जाया जाए.

आयशारज़ि अल्लाहू अन्हारि वायत करती हैं:

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मृत्यु तक लगातार रमज़ान के अंतिम चरण में एतेकाफ़ करते रहे एवं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मृत्यु के पश्चात उनकी पवित्र पत्नियां एतेकाफ़ करती रहीं."³⁰

एतेकाफ़ करने का कारण यह था कि आप शुभरात्रि की खोज करते,

अबूसईद खुदरी रज़ि अल्लाहू अन्होरि वायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "

मैंने इस शुभरात्रि की खोज करने हेतु प्रथम चरण का एतेकाफ़ किया,

³⁰ बुखारी: २०२६, एवं मुस्लिम: ११७२

फिर मैंने बीचके चरण एतेका फ़किया,
फिर मेरे पास जिब्रील का आगमन हुआ तो मुझसे कहा गया:
वह अंतिम १० रात्रि में है अब तुममें से जो एतेका फ़करना चाहे वह एतेका फ़
करले."³¹

२७-

रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तालाने इसके अंत में ज़
कात-

उलफ़ित्र के निकालने का आदेश दिया है जो व्रत के बीच पाए गए पापों एवं
कारात्मक बातों से उपवास करने वाले को पवित्र करती है,

इब्ने अब्बासर ज़ि अल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं:

"रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फ़ित्र के दान-

पुण्य को उपवास करने वालों को पाप एवं कारात्मक बातों से पवित्र करने
एवं लाचार व्यक्तियों (मिसकीन) के खाने हेतु अनिवार्य किया है."³²

२८- रमज़ान की विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआला ने
इसके पश्चात ईद के शईरा को अनिवार्य कर दिया है, दो महान

³¹ मुस्लिम: ११६७

³² इसे अबू दाऊद: १६०९ ने रिवायत किया है, एवं अल-सुनन के अनुसंधान में अरनाउत ने इसे हसन कहा है.

शआइर को अदा करने के पश्चात अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए दो ईदें अनिवार्य कर दी हैं,रमज़ान के रोजे और अल्लाह के घर का हज़,ईदुल फितर रमज़ान के रोजे पूरे होने के पश्चात मनाई जाती है,अतः जब मुसलमान रोजे पूरे कर लेते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें नरक से मुक्ति प्रदान फरमाता है,इस कृपा एवं दया के आभार के रूप में सदका-ए-फितर एवं ईद की नमाज़ अदा की जाती है,इस ईद में मुसलमानों का जुमा से भी अधिक बड़ा जनसमूहहोता है,उनकी महानता एवं महत्ता का प्रदर्शन होता है,इस शेआर पर उनका गर्व प्रकट होता है और उनकी प्रचूर्ता का ज्ञात होता है,इसी लिए इस दिल सारे लोगों के लिए ईदगाह जाना मुस्तहब है,यहां तक कि महिलाओं एवं बच्चों के लिए भी,बल्कि हाइज़ा (माहवारी महिला) महिलाएं भी मुसलमानों की दुआ में भाग लेंगी किन्तु ईदगाह से हट कर रहेंगी,ईद में इस महीने की समाप्ति,ईद के आगमन और रहमत की पूर्ति के अवसर पर प्रसन्नता का प्रदर्शन होता है।³³

³³ देखें:इब्ने रजब की "عَبْرَات",हदीस की व्याख्या:४५

२९- रमजान की एक विशेषता यह भी है कि इसके समापन पर तकबीर पुकारना अनिवार्य है,जिस का आरंभ ईद की रात के आगमन से होता है और ईद की नमाज़ की समापन तक चलती रहती है,अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾

अर्थात:तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआला की दी हुई हिदायत पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभार व्यक्त करो।

अर्थात:रमजान के तीस दिनों की गिनती पूरी करो,उसकी समाप्ति पर अल्लाह की तकबीर बयान करो,और अल्लाह ने इस प्रार्थना को करने की जो तौफ़ीक़ प्रदान की,इसे आसान बनाया,इसमें सहायता कि और इसके समापन तक पहुंचाया इस पर उसका शुक्र अदा करें।

इसी प्रकार से अल्लाह तआला ने हज़ की समाप्ति पर मुसलमानों के लिए ईदुलअजहा को अनिवार्य कर दिया वह इस प्रकार से कि हाजीणन अफ़ा के मैदान में ठहरते हैं,जो कि नरक से मुक्ति का दिन है,इस दिन से अधिक किसी भी दिन

न नरक से मुक्ति मिलती है और न पापों को क्षमा मिलती है,इस लिए अल्लाह ने इसके पश्चात ईद रखी जो कि सबसे बड़ी ईद है।

३०- रमज़ान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखता है और उसके पश्चात शौवाल के छे रोज़े रखता है वह उस व्यक्ति के जैसा है जो पूरे वर्ष रोज़े रखता है,क्योंकि सदाचार का पुण्य दस गुना बढ़ा कर दिया जाता है,जबकि उप व्यक्ति ने केवल ३६ दिनों के रोज़े रखे,अबू अय्यूब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात शौवाल के छे रोज़े रखे तो यह (पूरा वर्ष) लगातार रोज़े रखने के जैसा है"।³⁴

• यहरमज़ानकेमहीनेकी तीस
विशेषताएंहैंमुसलमानोंकोचाहिएकिवेइनसेअवगतहों,
एवंव्रतकेदौरानइन्हेंअपनीबुद्धिमेंसुरक्षितरखेंताकिईमानएवंलाभ
कीआशाकेसाथव्रतपूराकरनेमेंयहविशेषताएंसहायकस्वरूपहों.

³⁴ सही मुस्लिम:११६४

रमज़ान में अधिक कुरान पढ़ने पर प्रोत्साहित करना

ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान कुरान का महीना है,अल्लाह ने इस महीने में कुरान को बैतूलइज्ज़त से सांसारिक आकाष की ओर नाज़िल फरमाया,फिर घटनाओं के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर धीरे धीरे उतारा,बल्कि अल्लाह तआला ने कुरान के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को भी रमज़ानही में नाज़िल किया,वासिला बिन असका रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, नबो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:ष्द्ब्राहीम अलैहिस्सलाम का ग्रंथ रमज़ान की प्रथम रात को ,तौरात छठे रात को,इनजील रमज़ान के तेरह दिन गुजरने के पश्चात;अर्थात चौधवीं तारीखद्ध को और कुरान चौबीस दिन गुजरने के पश्चात ;अर्थात पचीसद्ध रमज़ान को नाज़िल हुआ।³⁵

- ए मोमिनो!कुरान का सस्वर पाठ रमज़ान में की जाने वाली महत्वपूर्ण प्रार्थना है,क्योंकि रमज़ान ऐसा महीना है जिस में कुरान को अधिक पढ़ना मुस्तहब;वांछनीयद्धकार्य है,धार्मिक पूर्वजों का परंपरा एवं प्रथा था कि वे रमज़ान में कई बार कुरान खत्म किया करते थे,कोई तीन रातों में कुरान समाप्त करलेता,तो कोई चार दिनों में खत्म करता और कोई चार से अधिक दिनों में कुरान खत्म करलेता।

- ए अल्लाह के बंदो!कुरान का सस्वर पाठ सबसे श्रेष्ठ प्रार्थना और अल्लाह की निकटता प्राप्ति का सबसे बड़ा माध्यम है,चाहे तहज्जुद एवं तरावीह में सस्वर पाठ की जाए अथवा नमाज़ के बाहर सस्वर पाठ की जाए,अब्दुल्लाह बिन **मसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिसने अल्लाह की पुस्तक का एक षब्द पढ़ा उसे उसके बदले एक पुण्य मिलेगा,और एक पुण्य दस

³⁵ इसे अहमद;4/107 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने अलसहीहा 1575 में इसे हसन कहा है।

गुना बढ़ा दिया जाएगा,में यह नहीं कहता कि «الم» एक षब्द है,बल्कि

«الف» एक षब्द है,«لام» एक षब्द है और«ميم» एक षब्द है³⁶

• अबू मूसा अषअरी रजीअल्लाहु अंहु ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:उस मोमिन का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,संतरे जैसी है जिस का सुगंध भी मधुर है और स्वाद भी सुस्वादु है और उस मोमिन का उदाहरण जो कुरान नहीं पढ़ता,खजूर जैसा है जिस में कोई सुगंध नहीं होता किंतु स्वाद मधुर होता है और पाखण्डी का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,रैहाना;पुशपद्ध जैसा है जिसका सुगंध तो अच्छा होता है किंतु स्वाद कड़वा होता है और जो मुनाफिक;पाखण्डीद्वकुरान भी नहीं पढ़ता उसका उदाहरण अंदराइन जैसा है जिसका सुगंध नहीं होता और स्वाद भी कड़वा होता है³⁷

• अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:रषक;ईश्या द्वेशद्ध तो केवल दो ही व्यक्तियों पर होना चाहिए:एक उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह तआला ने कुरान का ज्ञान दिया और वह रात.दिन उसकी सस्वर पाठ करता रहता है,उसका पड़ोसी सुन कर कह उठे कि काष मुझे भी इसके जैसा कुरान का ज्ञान होता और में भी इसके जैसा कार्य करता और वह दूसरा जिसे अल्लाह ने धन दिया और उसे सत्य के लिए लुटा रहा है।;उसको देख करद्वदूसरा व्यक्ति कह उठता है कि काष मेरे पास भी इसके जैसा धन होता और में भी उसके जैसा खर्च करता³⁸

• आयषा रजीअल्लाहु अंहा वर्णन करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:उस व्यक्ति का उदाहरण जो कुरान पढ़ता है और वह उसका हाफिज भी है,सम्मानित एवं लिखने वाले नेक देवदूतों जैसा

³⁶ इसे तिरमीजी ;2910 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही कहा है।

³⁷ इसे बोखारी;5427 और मुस्लिम;797 ने वर्णन किया है।

³⁸ इसे बोखारी;5026 ने वर्णित किया है।

है और जो व्यक्ति कुरान बारबार पढ़ता है। फिर भी वह उसके लिए कठिन है तो उसे दोगुना पुण्य मिलेगा³⁹

• अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:षक्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि जब वे अपने घर लौट कर जाए तो उसे तीन बड़ी मोटी गर्भवती **ऊंटनियां** घर पर बंधी हुई मिलीं? हमने कहा:जी हां,क्यों नहीं? आपने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:प्तुम में से जब कोई व्यक्ति नमाज़ में तीन आयतें पढ़ता है,तो यह उसके लिए तीन बड़ी मोटी गर्भवती **ऊंटनियों** से श्रेष्ठतर है⁴⁰

• उक़बा बिन आमिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकल कर बाहर आए। हम सफा,चबूतरे⁴¹ पर थे,आपने फरमाया:प्तुम में से कौन पसंद करता है कि रौजाना सुबह बतहान⁴² अथवा अकीक⁴³ की वादीद्वमें जाए और वहां से बेगैर किसी पाप एवं संबंध तौड़ने के दो बड़े बड़े कोहानों वाली **ऊंटनियां** लाए? हमने कहा:ए अल्लाह के रसूल!हम सब को यह बात पसंद है,आपने फरमाया:षफिर तुम में से सुबह कोई व्यक्ति मस्जिद में क्यों नहीं जाता कि वह अल्लाह की पुस्तक की दो आयतें सीखे अथवा उनकी सस्वर पाठ करे तो यह उसके लिए दो **ऊंटनियों** की प्राप्ति से अच्छा है और यह तीन आयतें तीन **ऊंटनियों** से अच्छा है और चार आयतें उसके लिए

³⁹ इसे बोखारी ;4937 और मुस्लिम ;798 ने वर्णित किया है उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

⁴⁰ मुस्लिम 208

⁴¹ यह मस्जिद नबवी की वह सायादार स्थान है जिसमें दरिद्र सहाबा शरण लेते थे। देखें: अलनेहाया

⁴² मदीना की वादी है

⁴³ मदीना की एक वादी है

चार ऊंटनियों से बेहतर हैं और;आयतों की संख्या जो भी हो द्द
ऊंटनियों की उतनी संख्या से बेहतर है।⁴⁴

• अबू अमामा बाहिली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:ष्कुरान पढा करो,क्योंकि वह क़यामत के दिन कुरान वालों;हिफज़ व पाठन व अमल करने वालोंद्धका सिफारषी बन कर आएगा⁴⁵

मोमिन बंदा जब रोज़ा के साथ कुरान की तिलावत;सस्वर पाठद्धकरे तो वह इस का अधिक पात्र होता है कि क़यामत के दिन यह अमाल उसके प्रति अनुषंसा करें कि उसके स्थान उच्च कर दिए जाएं और पाप मिटा दिए जाएं।अब्दुल्लाह बिन अमर रजीअल्लाहु अंहु रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:ष्रोज़ा और कुरान क़यामत के दिन बंदे के प्रति अनुषंसा करेंगे,रोज़ा कहेगा:;हे पालनहार!मेंने इसे खाने पीने और आतमा की इच्छाओं से रोके रखा,इसके प्रति मेरी अनुषंसा स्वीकार करले और कुरान कहेगा:;मेंने इसे रात को सोने से रोके रखा,इसके प्रति मेरी अनुषंसा स्वीकार करले इस प्रकार दोनों की अनुषंसा स्वीकार कर ली जाएगी।⁴⁶

षीर्शक:

⁴⁴ मुस्लिम 803द्ध

⁴⁵ मुस्लिम 804

⁴⁶ इसे अहमद ;2/174 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही अलतरगीब984 और षसही अलजामे7329 में उसे सही कहा है।

षबक़दर की दस विशेषताएं

अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत;नीतिद्ध से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता एवं प्रधानता प्रदान किया है,अतः जिलहिज्ज के दस दिनों को वर्ष के अन्य दिनों पर प्राथमिकता दी है,अरफा के दिन को वर्ष के समस्त दिनों पर प्राथमिकता प्रदान किया है,रमज़ान को अन्य समस्त महीनों पर प्रधानता दी है और षबे क़दर को रमज़ान की समस्त रातों से श्रेष्ठतर बताया है, षबे क़दर की दस विशेषताएं हैं जो निम्नलिखित हैं:

- प्रथम विशेषता:यह वह रात है जिसको अल्लाह ने यह विशेषता प्रदान किया है कि उसमें कुरान के नाज़िल करना प्रारंभ किया,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ)

अर्थात:निसंदेह हमने इसे षबे क़दर में नाज़िल किया।

इसी रात में कुरान लौहे महफूज़ से बैतुलइज्जत में नाज़िल हुआ जो सांसारिक आकाष में है,फिर वहां से घटनाओं के अनुसार कमषः नाज़िल होता रहा।

- षबे क़दर को इस नाम से जानने का कारण यह है कि इस रात का बड़ा महत्व है,जैसा कि कहा जाता है;अमुक व्यक्ति का बड़ा महत्व है,इस प्रकार महत्व को रात से संबंध करना,किसी वस्तु को उसके विशेषण की ओर संबंध करने की जाति से है।

- एक कथन यह है कि चूंकि इस रात में पूरे साल के मामले मोक़ददर;निष्चय द्ध किए जाते हैं,अर्थात वार्षिक तक़दीर निष्चय किए जाते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)

अर्थात:इसी रात में प्रत्येक मजबुत कार्य का निर्णय किया जाता है।

इब्नुलकय्मि कहते हैं कि:यही कथन सत्य है।^{47 48}

अतः इस रात में निर्णय लिया जाता है कि आगामी वर्ष में कोनसे कार्य होने हैं।अर्थात अल्लाह तआला देवदूतों को पूरे वर्ष की गतिविधियों से अवगत करता है,उन्हें विस्तारपूर्वक आगामी वर्ष की षबे क़दर तक घटने वाले समस्त घटनाओं से संबंधित कर्तव्यों का आदेश देता है,उनके समक्ष मृत्यु,रिज़क,फकीरी व अमीरी,हरयाली व अकाल,स्वास्थ्य एवं रोग,युद्ध एवं भूकंप और इस वर्ष घटित होने वाले समस्त घटनाएं स्पष्ट कर दिए जाते हैं।⁴⁹

इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैं:षबे क़दर में लौहे महफूज से,आने वाले वर्ष के मध्य घटने वाली मृत्यु एवं जीवन,रिज़क एवं वर्षा उल्लेख किया जाती हैं,यहां तक कि हाजियों के विशय में भी लिख लिया जाता ह कि अमुक अमुक व्यक्ति हज करेंगे⁵⁰

● षबे क़दर की द्वितीय विषेशता यह है कि:इस में देवदूत पृथ्वी पर नाज़िल होते हैं,अल्लाह का कथन है:

(تَنْزِيلُ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحُ فِيهَا)

अर्थात:इसमें देवदूत और रूह,जिबरईलद्ध उतरते हैं।

रूह का अर्थ जिबरईल है,इब्ने कसीर रहीमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:अर्थात यह रात जोकि बड़ी बरकतों वाली होती है,इस लिए अधिक संख्या में देवदूत नाज़िल होते हैं,बरकत एवं रहमत के साथ देवदूत भी नाज़िल होते हैं,जिस प्रकार कुरान के सस्वर पाठ के समय

⁴⁷ षफाउल अलील:1 / 110,प्रकाषक:अलअबीकान पुस्तकालय.रियाज

⁴⁸ इन दोनों कथनों के लिए देखें:अहदीसल सियाम40,षैख अब्दुल्लाह अलफौज़ान की

⁴⁹ अल्लाह तआला के कथन(فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)का व्याख्या देखें:षंकीती रहीमहुल्लाह की तफसीरअज़वाउल बयान में सूरह अलदोखन में।

⁵⁰ इस कथन को इब्ने जरीर आदी ने इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से निम्नलिखित आयत की व्याख्या में उल्लेख किया है,उपरोक्त षब्द इब्ने जरीर से वर्णित हैं।

देवदूत नाज़िल होते हैं, शैक्षिक सभा को घेर लेते हैं और सत्य नियत के साथ ज्ञान प्राप्ति में व्यस्थ रहने वाले छात्रों के सम्मान में अपने पंख बिछा देते हैं। समाप्त

● षबे क़दर की तृतीय विशेषता: अल्लाह तआला ने इस रात को सौभाग्यशाली बताया है, अल्लाह तआला कुरान के नाज़िल होने के प्रति फरमाता है:

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ)

अर्थात: निसंदेह हमने इसे सौभाग्यशाली रात में उतारा है।

● षबे क़दर की चौथी विशेषता: अल्लाह तआला ने इसे शांति की रात कहा है यहां तक कि फजर हो जाए, अर्थात प्रत्येक प्रकार की बुराइयों व फितनों से सलामति; सुरक्षा की रात, क्योंकि इस में कलयाण एवं अच्छाई अधिक से अधिक होती है, यहां तक कि फजर निकल आए।

● षबे क़दर की पांचवी विशेषता: जो व्यक्ति इस रात को क़याम करे अर्थात इसे नमाज़ से आबाद करे, .; ईमान के साथ अर्थात अल्लाह तआला इस महान रात में क़याम करने वालों के लिए जो बदला व पुण्य तैयार कर रखा है, उस पर ईमान रखते हुए, .; एहतेसाब के साथ अर्थात: बदला व पुण्य की आशा करते हुए, उसके पूर्व के समस्त पाप माफ हो जाते हैं, अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो लैलतुल क़दर में ईमान व एहतेसाब के साथ नमाज़ में खड़ा रहे उस के पूर्व के समस्त पापों को क्षमा प्रदान किया जाता है⁵¹

● षबे क़दर की छठी विशेषता: इस रात को नमाज़ से आबाद करना हजार रातों की प्रार्थना से बेहतर है, अर्थात तेरासी; 83 द्ववर्षों से भी अधिक, अल्लाह का कथन है:

⁵¹ इसे बोखारी; 1901 और मुस्लिम; 759 ने रिवायत किया है।

(كَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ)

अर्थात:षबे क़दर एक हज़ार महीनों से बेहतर है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:रमज़ान का शुभ महीना तुम्हारे पास आ चुका है,अल्लाह तआला न तुम पर इसके रोज़े फरज़ कर दिए हैं,इस में आकाष के दरवाजे खोल दिए जाते हैं,नरक के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं,और सरकष बैतानों को जंजीरें लगा दी जाती हैं,और इस में अल्लाह तआला के लिए एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है,जो इस के अच्छाई से वंचित रहा तो वह बस वंचित ही रहा⁵²

इब्ने सादी रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:यह ऐसा;पुरस्कारद्ध है जिस के सामने बुद्धि आश्चर्यचकित और चेतना परीषान होजाता है कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस रात की प्रार्थना हज़ार रातों की प्रार्थना के समान है,जो कि एक लंबी आयू वाले मनुश्य के जीवन के बराबर है,अस्सी;80द्धवर्श से भी अधिक।⁵³संक्षेप एवं हलके हैरफ़ैर के साथ समाप्त हुआ।

● षबे क़दर की सातवीं विशेषता: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अंतिम दस दिनों में षबे क़दर की खोज में जितना परिश्रम करते थे उतना परिश्रम अन्य दिनों में नहीं करते थे,आयषा रजीअल्लाहु अंहा रिवायत करती हैं कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंतिम अ़षरे;अंतिम दस दिनोंद्धमें प्रार्थना में इतना परिश्रम करते थे जितना अन्य दिनों में नहीं करते थे।⁵⁴

आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याह आदत थी कि जब रमज़ान का अंतिम अ़षरा आता तो

⁵² इसे निसाई;2106ने अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही कहा है

⁵³ लगभग तेरासी (८३) वर्ष

⁵⁴ मुस्लिम ;1175

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात भर जागते और घर वालों को भी जगाते, ;प्रार्थना मेंद्वकठोर परिश्रम करते और कमर कस लते और हिम्मत बांध लेते थे।⁵⁵

;कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते इस का अर्थ यह है कि प्रार्थना के लिए तैयार रहते,उसमें परिश्रम एवं लगन से काम लेते,और आदत के कहीं अधिक प्रार्थना करते थे,एक कथन यह भी है कि पत्नियों से अलग रहते और संभोग से दूर रहते।

● षबे क़दर की आठवीं विषेशता: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम षबे क़दर की खोज में रमज़ान के अंतिम अ़षरे में मस्जिद के अंदर एतेकाफ किया करते थे,आयषा रजीअल्लाहु अंहा फरमाती हैं: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मृत्यु तक बराबर रमज़ान के अंतिम अ़षरे में एतेकाफ करते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां एतेकाफ करती रहीं।⁵⁶

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मैंने षबे क़दर को खोजने के लिए प्रथम अ़षरे का एतेकाफ किया,फिर मैंने मध्य अ़षरे का एतेकाफ किया,फिर मेरे पास,जिबरईल आए द्द तो मुझसे कहा गया:वह अंतिम दस रातों में है तो अब तुम में से जो एतेकाफ करना चाहे वह एतेकाफ करले।⁵⁷

● ए अल्लाह के बंदो! पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना परिश्रम एवं लगन से प्रार्थना करना इस बात का प्रमाण है कि आप महत्वपूर्ण समयों में अल्लाह की अधिक से अधिक आज्ञाकारी किया करते थे,इस लिए मुसलमानों को भी पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगमन करना चाहिए कि आप ही आदर्ष हैं,हम मुसलमानों को अति परिश्रम के साथ अल्लाह की पूजा करनी चाहिए और रात व दिन के

⁵⁵ बोखारी;2034,मुस्लिम;1174 और निम्नलिखत षब्द मुस्लिम से वर्णित हैं।

⁵⁶ इसे बोखारी;2026 और मुस्लिम;1172 ने रिवायत किया है।

⁵⁷ मुस्लिम ;1167

समय को नश्ट नहीं करना चाहिए,क्योंकि मनुश्य नहीं जानता कि कब स्वादों को तोड़ने और लोगों से जुदा करदेने वाली मौत उसे आ पकड़े,फिर उस समय उसे अफसोस हो जब अफसोस का कोई लाभ नहीं होगा।⁵⁸

● षबे क़दर की नौवीं विषेशता:इस रात में विषेश रूप से अल्लाह से क्षमा प्राप्त करने पर प्रोत्साहन आया है,आयषा रजीअल्लाहु अंहा ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा:ए अल्लाह के नबी!यदी में षबे क़दर पालूं तो क्या दुआ मागूं?आपने फरमाया:यह कहना:

(اللهم! انك عفوتنا بالعرفوفا عفني)

अर्थात:हे अल्लाह!तू अधिक क्षमा प्रदान करने वाला है,तू क्षमा को पसंद करता है,अतःमुझे क्षमा प्रदान कर दे।

● षबे क़दर की दसवीं विषेशता:अल्लाह तअ़ाला ने इस के महत्व में एक सूरह नाज़िल फरमाई जो क़यामत तक सस्वर पाठ की जाती रहेगी,इसके माध्यम से इस की महानता को स्पष्ट किया,इसकी महानता का कारण यह बताया कि इस रात कुरान नाज़िल किया गया,एवं यह भी उल्लेख किया कि इस रात देवदूत पृथ्वी पर उतरते हैं,एवं जो इस रात को नमाज़ एवं प्रार्थना में गुजारता है उसका क्या पुण्य है,इस रात के आरंभ और अंत को स्पष्ट किया,समस्त प्रषंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने बंदों पर कृपा करते हए उन्हें पुण्य के वसंत का मौसम प्रदान किया।

● हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसी प्रकार रमज़ान के रोज़े रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे जिस प्रकार उसे पसंद है,और अपने ज़िक्र व धन्यवाद और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।

● अल्लाह तअ़ाला ने षबे क़दर को अपनी नीति से गुप्त रखा है,वह हिकमत यह है कि मोमिन बंदा उसकी खोज में पूरी दस रातें प्रार्थना करे,ताकि बड़े पुण्य को प्राप्त कर सके,इसके विपरीत यदि मालूम होता

⁵⁸ षैख मोहम्मद बिन सालेह अलमुनजिद के लेख से हलके हैरफ़ैर के साथ लिया गया है,मैंने यह कथन उनके वैबसाइट से लिया है।

कि षबे क़दर कोंसी तिथि को होती है तो वह केवल उसी रात में प्रार्थना करता।

● यदि षबे क़दर के बारे में मालूम होता कि वह कोंसी रात है तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके खोज में पूरी दस रातें एतेकाफ न करते और न अपनी उम्मत को यह निर्देश देते कि उसकी खोज में दस रात एतेकाफ करें, बल्कि केवल षबे क़दर में ही आप एतेकाफ करते, जबकि वास्तव यह है कि आप ने संपूर्ण दस रातों में उसको खोजने का आदेश दिया है, विशेष रूप से ताक़; विशमद्ध रातों में, जो इस बात का प्रमाण है कि ताक़ रात में षबे क़दर होने का अधिक संभावना होता है, आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: षब क़दर को रमज़ान के अंतिम अ़षरे की ताक़; विशमद्ध रातों में खोजो⁵⁹

ज्ञात हुआ कि इस्लामी पाठ इस बात के साक्ष हैं कि षबे क़दर प्रत्येक वर्ष अलग अलग रातों में हुआ करती है, किंतु इन दस रातों के अंदर ही सीमित रहती है।

इस लिए मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़षरे की समस्त रातों के अंदर प्रार्थना में वयस्ता रहे, लोग सोशल नेटवर्क पर जो प्रसारित करते फिरते हैं कि षबे क़दर अमुक रात को होती है, इससे सतर्क रहें, यह ऐसी बात है जो समय की बरबादी और अ़मल से दूरी की ओर लेजाती है।

● ए अल्लाह के बंदो! मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़षरे में अन्य दिनों के तुलना में अधिक परिश्रम एवं लगन से प्रार्थना करे, इसके दो कारण हैं, एक यह कि: इस अ़षरे का अधिक महत्व है और इसी में षबे क़दर भी होती है, दूसरा यह कि: यह महीना उससे विदा हो रहा है और वह नहीं जानता कि आगामी वर्ष उसे यह महीना नसीब होगा अथवा नहीं।⁶⁰

⁵⁹बोखारी 2017

⁶⁰ यह कथन इब्न अलजौजी का है जो उन्होंने अपनी पुस्तक अलतबसेरहम्में उल्लेख किया है, हैरफैर के साथ वर्णित।

शीर्षक:

ईदुलफ़ितर से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله
مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا
عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविशकारित
बिदअत;नवाचारद्ध है और प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही
नरक में ले जाने वाली है।

1^प ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह तअ़ाला से पूरे तौर से डरो और
उसका तक़्वा अपनाओ, इस्लाम को बलपूर्वक थाम लो, और अल्लाह
तअ़ाला की प्रशंसा करो कि उसने रमज़ान महीने के अंत तक तुमको
पहुंचाया, तुम्हारे रब का कथन है:

(وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَيْمًا هَذَا كُمْوَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ)

अर्थात: वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तअ़ाला
की दी हुई मार्गदर्शन पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभारी रहो।

2^प ए मुसलमानो! निसंदेह अल्लाह तअ़ाला ने सत्य फरमाया कि
रमज़ान केवल:; गिनती के कुछ दिन हैं, यह दिन कितनी जलदी गुजर
जाते हैं, यह दिन रात गुज़र गए और हमसे जुदा हो गए, आपको महसूस
हुआ कि कैसे यह दिन गुजर गए? क्या आपको एहसास हुआ कि कितनी
जलदी यह दिन रात बीत गए?

3^प ए मोमिनो! आपको बधाई हो कि आपने इस महीने के रोज़े
रखे, आपको बधाई हो कि आपने इस महीने की रातों में क़याम
किया, आपको बधाई हो कि आप इस महीने के अंत तक को पहुंच
गए, जबकि बहुत से लोगों का निधन हो गया और उन्हें रमज़ान का यह

अंतिम क्षण नसीब न होसका,हममे से प्रत्येक पर अल्लाह के अनेक आशीर्वाद हैं ।

4^७ ए मुसलमानो!आप सब को वह खुषी बधाई हो जो हमें इस्लाम के इस महान स्तंभ को पूरा करने के पश्चात रमज़ान महीने के अंत में प्राप्त होती है,हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं,उसके एकता और उसकी महानता की गीत गाते हैं,यदि अल्लाह ने चाहा तो हमारे पुण्यों में वृद्धि हुआ होगा,हमारे पापां को क्षमा मिला होगा और हमारे स्थान उच्च हुए होंगे ।

5^७ ए अल्लाह के बंदो!आपको वह खुषी बधाई हो जो हमें दो महान अवसरों के पश्चात ईद के रूप में प्राप्त होती है,जिसमें हमारे पाप मिटाए जाते हैं,पुण्यों में वृद्धि होता है,हमारे स्थान उच्च होजाते हैं,रोज़े पूरे करने के पश्चात हम ईदुलफ़ितर मनोते हैं और हज़ पूरा करने के पश्चात ईदुलअज़हा मनाते हैं,हमारी ईदें दीन व प्रार्थना,नमाज़ व तकबीर, ;प्राण की बलिद्ध और ज़काते फितर से निर्मित हैं,यह खुषी भी है और परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार भी,आपसी मोलाकात,आपसी प्रेम,पूर्व के पापों को क्षमा और नए संबंध बनाने,छल.कपट और कीना को भूल जाने का उत्तम अवसर है,जिस व्यक्ति को किसी परिजन अथवा मित्र से छल.कपट हो अथवा संबंध टूट गया हो तो उस दिन को गनीमत जान कर संबंध को जोड़े और नए से संबंध बनाए और दिलों में खूषियों के रंग भरे,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है:;अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि किसी मुसलमान को खुषी पहुंचाई जाए द्ध;सही अलतरगीब:955द्ध

6^७ ए मोमिनो!आपको हमारी ईद की यह ;पवित्र द्धखुषी की बधई हो जो बहुदेववादी और गुमराह समुदायों की ईदों में नहीं पाई जाती,बल्कि उनकी ईदें उनके पाप और अल्लाह से दूरी में वृद्धि कर देती हैं ।

अल्लाह के बंदो!इन रहमतों से प्रसन्न होजाएँ,अल्लाह का कथन है:

(قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا)

अर्थात:आप कह दोजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस आशीर्वाद और रहमत से प्रसन्न होना चाहिए।

अल्लाह से और;रहमत व बरकतद्वआशीर्वाद की दुआ करें,समस्त प्रषंसाएं अल्लाह के लिए हैं कि उसने हमारे उपर यह कृपा किया कि हमें इस्लाम और सुन्नत का निर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

7.ए मुसलमानो! ;ईद के दिनद्वसिंगार करें खुषबू लगाएं,इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:;मेंने विद्वानों से सुना कि वह अतर और सिंगार को हर ईद में मुस्तहब समझते थ⁶¹

8.ए मोमिनो!अपने घरों को और अपने दिलों को खोल कर रखें,एक दुसरे के लिए दुआ करें कि अल्लाह सब के अमल को स्वीकार करे,एक दुसरे को भदाई दें,सहाबा एक दुसरे को बधई देते हुए कहा करते थे:

تقبل الله منا و منكم

अल्लाह तअाला हमारे और आपके पुण्यों को स्वीकार फरमाए।द्व

9.ए मुसलमानो!पूर्व के कमयों को क्षमा करना एक अति महत्वपूर्ण प्रार्थना एवं आज्ञाकारी है,अल्लाह तअाला ने उस पर अनेक बदला व पुण्य रखा है,अल्लाह का कथन है:

(فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ)

अर्थात:जो क्षमा करदे और सुधार करले उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है।

अतः अल्लाह ने ;इस कार्य परद्वअनेक बदला व पुण्य का वादा किया है,जिससे पता चलता है कि यह अमल बड़ा महान है।

ए मोमिनो!आत्मा;दिलोंद्व की सुधार और उनका षुद्धिकरण एक श्रेष्ठतर प्रार्थना है,उस पर अल्लाह ने सफलता रखी है,अल्लाह का कथन है:

(فَدَّ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا)

अर्थात:जिसने उसे पवित्र किया वह सफल हुआ और जिसने उसे भूमी में मिला दिया वह विफल हुआ।

⁶¹ इब्ने रजब की पुस्तक षरहुलबोखारी;6/68,प्रकाषक:इब्नुलजौजी.अलदमाम।

अल्लाह के बंदो!जिन कार्यों से प्रसन्ता में वृद्धि होता है,उनमें यह भी है कि समाजी संबंध अच्छे बनाए जाएं,उनका नवीनीकरण किया जाए,उनमें शक्ति लाई जाए,पूरे वर्ष के मध्य दिलों में छल कपट और नफरत के जो धूल जम गए हैं,उनसे दिलों को पवित्र किया जाए,बधाई है उस व्यक्ति के लिए जो ईद को गनीमत जान कर बिखरे हुए पति पत्नी के संबंध को बनादे,आपस में दूर दिलों को जोड़दे,जिसके कारण से उनके परिवार में खूषी पैदा हो जाए,अथवा कोई रक्त क्षमा करदे,अथवा परिजनों की आपसी रंजिष को दूर करदे ।

ए अल्लाह **समस्त प्रशंसाएं तेरे ही योग्य हैं** तूने हमारे उपर रमज़ान के महीने का अंत और ईद को पहुंचाने का जो उपकार किया है,उसे हमारे लिए बरकत वाला बना दे और अपनी आज्ञाकारी के लिए इसे सहायक बनादे,ए अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुछसे निकट करदे,में अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है ।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

10.ए अल्लाह के बंदो!आप जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि सबसे बड़ी खूषी उस समय प्राप्त होगी जब आप अल्लाह तआला से पुण्य के कार्यों के साथ मोलाक़ात करेंगे,अल्लाह तआला स्वर्ग वालों से फरमाएगा:ए स्वर्ग वासियो!स्वर्ग वासी उत्तर देंगे:हम उपस्थित हैं ए हमारे परवरदिगार!तेरी शुभकामनाएं प्राप्त करने के लिए।अल्लाह तआला पूछेगा:क्या अब तुमलोग खुष हुए?वे कहेंगे:अब भी भला हम खुष न होंगे जबकि तूने हमें वह सब कुछ दे दिया जो अपनी मख़लूक में से किसी को नहीं दिया।अल्लाह तआला फरमाएगा:में तुम्हें उससे भी अच्छा बदला दूंगा।स्वर्ग वासी कहेंगे:ए रब!इससे अच्छा और क्या चीज होगी?अल्लाह तआला फरमाएगा कि:अब में तुम्हारे लिए अपनी प्रसन्नता को सवेद रहने वाला कर दूंगा अर्थात उसके पश्चात कभी तुम पर नाराज नहीं हूंगा।⁶²

11.ए मोमिनो!रमज़ान सुधार का और सवेद के लिए अल्लाह तआला से संबंध बनाने का उत्तम अवसर है,इस लिए आप प्रार्थना में लगे रहें,रमज़ान के साथ प्रार्थना समाप्त नहीं होता,बल्कि मृत्यु के पश्चात अमल का दरवाजा बंद होता है:

(وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ)

अर्थात:अपने रब की पूजा करते रहें यहां तक कि आपको मृत्यु आजाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:;अल्लाह के दरबार में सबसे अधिक पसंद वह कार्य है जिसे पाबंदी से सवेद किया जाए,चाहे वह कम ही हो⁶³

ए मुसलमानो!रमज़ान के पश्चात भी पुण्य के कार्य पर स्थिर रहना अल्लाह की तौफीक़ और अमल के स्वीकार होने की पहचान है,इसके

⁶² बोखारी ;6549 और मुस्लिम;2829 ने इसे अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

⁶³ बोखारी ;5861द्ध ने आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।

विपरीत केवल मौसम ही मौसम अमल करना कम ज्ञान,अल्लाह की तौफीक से दूरी का प्रमाण है,क्योंकि जो रमज़ान का रब है वही समस्त महीनों का रब है,किसी सलफ से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो व्यक्ति रमज़ान में खूब प्रार्थना करता है और उसके अतिरिक्त महीनों में प्रार्थना छोड़ देता है,तो उन्होंने ने उत्तर दिया:यह बहुत ही बुरी कोम है जो केवल रमज़ान में अल्लाह को जानती है।

ए मोमिनो!मुसलमानों का एक श्रेष्ठ गुन यह है कि वे आज्ञाकारी करते हैं,आज्ञाकारी यह है कि प्रार्थना पर स्थिर रहा जाए और उसको सवेद किया जाए,अल्लाह ने आज्ञाकारी करने वालों की प्रशंसा करते हुए फरमाया:

(إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا)

अर्थात:-जो लोग अल्लाह के आगे आज्ञाकारी के साथ अपने सर को झुकाने वाले हैं,द्विमुसलमान पुरुश और मुसलमान महिलाएं और मोमिन पुरुश और मोमिन महिलाएं और आज्ञाकारी पुरुश और आज्ञाकारी महिलाएं और सत्य बोलने वाले पुरुश और सत्य बोलने वाली महिलाएं और सबर करने वाले पुरुश और सबर करने वाली महिलाएं डरने वाले पुरुश और डरने वाली महिलाएं और दान करने वाले पुरुश और दान करने वाली महिलाएं और रोज़े रखने वाले पुरुश और रोज़े रखने वाली महिलाएं और अपनी षरमगाहों की सुरक्षा करने वाले पुरुश और षरमगाहों की सुरक्षा करने वाली महिलाएं और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करने वाले पुरुश और अधिक से अधिक याद करने वाली महिलाएं.कुछ संदेह नहीं कि उसके लिए अल्लाह ने क्षमा और विषाल बदला तैयार कर रखा है।

12.ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान के पष्चात षौवाल के छे रोज़े रखना सुन्नत और मुस्तहब है और अल्लाह तआला ने इस पर बड़े बदले का वादा कर रखा है,जैसा कि अबू अय्यूब रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है

कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिसने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात छे रोज़े रखे तो यह;पूरे वर्षद्वलगातार रोज़े रखने के जैसा है।⁶⁴

षौवाल के छे रोज़े की एक बड़ी हिकमत ;नीतिद्व यह है कि रमज़ान के फरज़ रोज़ों में जो कमी रह जाती है,इन नफली रोज़ों से इसकी भरपाई हो जाती है,क्योंकि रोज़ेदार से कोई न कोई कोताही अथवा पाप हो जाता है जो फरज़ को प्रभावित करदेता है,अतःनफली रोज़े से फरज़ रोज़े की यह कमी दूर हो जाती है।

ईद से संबंधित यह दस;से अधिकद्व बिन्दु हैं,मुस्लिम बंदा को चाहिए कि ईदुलफ़ितर के अवसर पर इन्हें जेहन में रखे,ताकि ईद प्रार्थना में बदल जाए,केवल रीति रिवाज न रहे।

हे अल्लाह!हमारे पापों को और हमसे हमारे कामों में जो बेकार की जेयादती हुई है,उसे भी क्षमा करदे,हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हे अल्लाह!स्वर्ग को हमारा ठेकाना बनादे,हमें फिरदौसे बरीं का निवासी बना,हमें बिना हिसाब और बेगैर किसी यातना के स्वर्ग में प्रवेश प्रदान फरमा,ए करीम व दाता प्रवर्दिगार!हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हमें हमारे पापों से इस प्रकार पवित्र करदे जिस प्रकार हमारी माताओं ने हमें जना था,हे अल्लाह!हमारे इस सभा को पापों से क्षमा,अमल की स्वीकृति और परिश्रम की स्वीकृति व धन्यवाद के साथ समाप्ति फरमा,हे अल्लाह हमारे देश को और मुसलमानों के समस्त देशों को शांति,सोकून और खुषहाली व हरयाली का स्थान बनादे,हे अल्लाह!हमारी ईद को खुषी का स्त्रोत,हमारे जीवन को खुषहाल करदे,हमें स्वास्थ्य और शांति के साथ बारबार आज्ञाकारी व बरकत का मोसम प्रदान कर।

اللهم صل على محمد وعلى آل محمد، سبحانك ربنا رب العزة عما يصفون
وسلام على المرسلين، الحمد لله رب العالمين

लेखक:

शैख माजिद बिन सुलैमान अरसी

१षौवाल १४४२ हिजरी

जूबैल,सऊदी अरब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवाद:

फैजुर रहमान हिफजुर रहमान तैमी
binhifzurrahman@gmail.com